रजिस्ट्री सं. डी. एल.-33004/93 REGD. NO. D.L.-33004/93

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 147] नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अगस्त 5, 1993/श्रावण 14, 1915
No. 147] NEW DELHI, THURSDAY, AUGUST 5, 1993/SRAVANA 14, 1915

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 अगस्त, 1993

निधन-सूचना

सं. 3/5/93 पब्लिक.— राष्ट्रपति ने पश्चिम बंगाल के राज्यपाल, प्रो. सैय्यद नुरूल हसन के कलकत्ता में सोमवार, 12 जुलाई, 1993 को 4.40 बजे अपराह्न हुए निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उनके निधन से भारत ने एक ऐसे प्रतिष्ठित विद्वान, शिक्षाविद्, मानवतावादी तथा सांसद को खो दिया है जो श्रेष्ठता के प्रति निरंतर समर्पित रहा।

2. अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान एवं बुद्धिजीवी, प्रो. हसन का जन्म 26 दिसम्बर, 1921 को लखनऊ में श्री सैय्यद अब्दुल हसन तथा श्रीमती नूर फातिमा के पुत्र के रूप में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि तथा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से इतिहास में डी. फिल. की उपाधि प्राप्त की। भारत लौटने पर

उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में 7 वर्षों तक इतिहास का अध्यापन किया। सन् 1949 में 28 वर्ष की अल्प आयु में ही उन्होंने अलीगढ़ विश्वविद्यालय के प्राध्यापक के पद को सुशोभित किया। वह दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास के प्राध्यापक के पद पर भी आसीन रहे। मुगलकाल के दौरान भारत में व्याप्त सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अपने गहन अध्ययन के माध्यम से उन्होंने महत्वपूर्ण शैक्षणिक योगदान किया।

3. वह भारतीय इतिहास कांग्रेस के तीन बार अध्यक्ष रहे तथा प्रतिष्ठित मानव सभ्यता के इतिहास परिषद के माध्यम से यूनेस्को के साथ भी जुड़े रहे। वह ऑक्सफोर्ड मजलिस के अध्यक्ष होने के साथ-साथ, ऑल सौल्स कालेज के फैलो भी रहे। वह रायल हिस्टोरिकल सोसायटी, लदन और साथ ही साथ एशियाटिक सोसायटी, ऑफ लंदन के फैलो थे। वह इंटरनेशनल कांग्रेस ऑफ हिस्टोरिकल साईंसेज बुखारेस्ट, 1980 के अध्यक्ष पद पर भी रहे।

4. वर्ष 1968 में उन्हें राज्य सभा के सदस्य के रूप में नामित किया गया और बाद में वर्ष 1971 में राज्य सभा के निर्वाचित सदस्य हो गए तथा वर्ष 1978 तक उस हैसियत में बने रहे।

5. वर्ष 1983—86 के दौरान वह पूर्व सोवियत संघ में हमारे राजदूत थे। अपने सौम्य स्वभाव और विद्वता के कारण मास्को में उन्होंने लोकप्रियता हासिल की। एकेडमी ऑफ साईंसेज ऑफ यू एस एस आर के विजिटिंग फैलो के रूप में वह कई सामाजिक और स्वैच्छिक संगठनों से जुड़े रहे। 1967 और 1971 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारतीय शिष्टमंडल के एक सदस्य थे। प्रो. हसन ने 1972, 1974 और 1976 में हुए युनेस्को के महा सम्मेलनों में भारतीय शिष्टमंडलों का नेतृत्व किया।

6. शिक्षा के क्षेत्र में उनकी श्रेष्ठता की मान्यता स्वरूप उन्हें 1971 में शिक्षा, समाज कल्याण और संस्कृति मंत्रालय में स्वतंत्र प्रभार सहित राज्य मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया। इस क्षमता में उन्होंने 1977 के पूर्वार्द्ध तक कार्य किया।

7. एक वरिष्ठ राजनेता होने के नाते, उन्हें वर्ष 1986 में पश्चिम बंगाल का राज्यपाल नियुक्त किया गया और मृत्यु पर्यन्त वह इस पद पर बने रहे। पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के रूप में प्रो. हसन ने अनुकरणीय शालीनता और मर्यादा का परिचय दिया और जनसाधारण से अत्यधिक सम्मान पाया।

8. प्रोफेसर हसन को बी. सी. राय पुरस्कार (1984) और स्वामी प्रणवानंद पुरस्कार (1988) से सम्मानित किया गया।

9. प्रो. हसन एक विद्वान, एक दार्शनिक, एक राजनेता और एक प्रशासक के गुणों से परिपूर्ण थे। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाता रहेगा।

एन. एन. वोहरा, गृह सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 5th August, 1993

OBITUARY

No. 3/5/93-Public.—The President has learnt with deep regret of the death in Calcutta of Prof. Saiyid Nurul Hasan, Governor of West Bengal, at 1.40 P.M. on Monday, the 12th July, 1993. In his passing away, India has lost an eminent scholar and educationist, humanist and Parliamentarian dedicated to the continuing pursuit of excellence.

2. An erudite scholar and an intellectual of international repute, Prof. Hasan was born to Shri Saiyid Abdul Hasan and Smt. Nur Fatima on 26th December, 1921, in Lucknow. He obtained his Master's degree from Allahabad University and D. Phil. in History from Oxford University. On return to India, he taught History in the Lucknow University for 7 years. In 1949, he became a Professor in the Aligarh University at the young age of 28 years. He also served as a Professor of History in the Delhi University. He made significant academic contribution through his study of the socio-economic conditions that prevailed in India during the Moghul period.

3. He was President of the Indian Historical Congress thrice and had been associated with UNESCO in its prestigious History of Mankind project. He was also a Fellow of the All Souls College, Oxford, besides being the President of the Oxford Majlis. He was a Fellow of the Royal Historical Society, London, as well as the Royal Asiatic Society of London. He was President of the International Congress of Historical Sciences, Bucharest, 1980.

4. He was nominated as a Member of the Rajya Sabha in 1968 and later on became an elected-Member of the Rajya Sabha, in 1971, and served in that capacity upto 1978.

5. He served as our Ambassador to the erstwhile Soviet Union during 1983—86. His amiable disposition and scholarship made him a popular figure in Moscow. A visiting Fellow of the Academy of Sciences of USSR, he was associated with a number of social and voluntary organisations. He was a member of the Indian delegation to the U. N. General Assembly in 1967 and 1971. Prof. Hasan led Indian delegations to the UNESCO General Conferences in 1972, 1974 and 1976.

6. In recognition of his eminence in the filed of education, he was appointed as a Minister of State in independent charge of the Union Ministry of Education, Social Welfare and Culture in 1971. He served in this capacity till early 1977.

7. Being a senior statesman, he was appointed Governor of West Bengal in 1986 and continued as such till his death. As Governor of West Bengal Prof. Hasan conducted himself with exemplary grace and dignity, and was greatly respected by the people.

8. Prof. Hasan was a recipient of the B. C. Roy Award (1984) and the Swami Pranavananda Award (1986).

9. Prof. Nurul Hasan combined in him the attributes of a scholar, a philosopher, a statesman and an administrator. His contributions in diverse sections of national reconstruction will always be remembered.

N. N. VOHRA, Home Secy.

Printed by the Manager, Govt. of India Press, Ring Road, Maya Puri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054, 1993